शोध | एनएसआइ में चुकंदर से इथेनॉल बनाने के प्रारंभिक प्रयोग रहे सफल

इथेनॉल का लक्ष्य पूरा करेगा चुकंदर

जागरण संवाददाता, कानपुर : पेट्रोल में दस फीसद इथेनॉल मिश्रित करने का लक्ष्य चुकंदर पूरा करेगा। चुकंदर से इथेनॉल बनाने की तकनीक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) ने तलाश ली है। प्रारंभिक प्रयोगों में परीक्षण सफल रहने के बाद बेल्जियम की 'सेस वेंडर हैव' कंपनी ने इस शोध कार्य में सहभागिता करने की ख्वाहिश जताई है। चुकंदर से इथेनॉल बनाने के लिए यह कंपनी चुकंदर के विभिन्न प्रजातियों के बीच एनएसआइ को मुहैया कराएगी। सोमवार को इस पर एनएसआइ निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन व कंपनी के मार्केटिंग हेड जोन नोयल ने करार किया। इस दौरान उन्होंने चुकंदर के कुछ बीज भी एनएसआइ निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन को दिए।

जोन नोयल ने कहा कि उनकी कंपनी चुकंदर की एसजेड-35 व पीएसी 60008 समेत अन्य प्रजातियों के बीच उपलब्ध कराएगी। करार के दौरान प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि पेट्रोल में दस फीसद इथेनॉल मिश्रित करने के लिए अभी 330 करोड़ लीटर इथेनॉल की जरूरत है। शीरे से बनने वाले इथेनॉल से महज 6.5 फीसद ही जरूरत पूरी हो रही है। भविष्य में 20 फीसद इथेनॉल मिलाने की योजना है इसलिए इसे बनाने के लिए नए विकल्पों की तलाश जरूरी है।

उन्होंने बताया कि एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। इसकी फसल महज पांच से छह माह में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा गन्ने की अपेक्षा इसकी सिंचाई में 30 से 40 फीसद कम पानी लगता है। उत्तर भारत में इसकी बुवाई नवंबर माह में की जाती है जबकि अप्रैल माह में इसकी फसल को काट लिया जाता है। गन्ने के साथ भी इसकी खेती की जा सकती है। उन्होंने बताया कि इससे न केवल जरूरत के मुताबिक इथेनॉल का उत्पादन किया जा सकेगा बल्कि किसानों की आय दोगुना करने में भी इसकी खेती मददगार साबित होगी।

एनएसआइ निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन को परीक्षण के लिए चुकंदर के बीज मुहैया कराते बेल्जियम की 'सेस वेंडर हैव' कंपनी के मार्केटिंग हेड जोन नोयल • जागरण

- परीक्षण के लिए बेल्जियम की 'सेस वेंडर हैव' कंपनी देगी चुकंदर के बीज
- किसानों की आय दोगुना करने में भी इथेनॉल की खेती होगी मददगार

चुकन्दर से इथेनॉल बनाने की तैयारी में जुटा एनएसआई

भविष्य में 20 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेंडिंग के लिए नये वैकल्पिक स्रोतों की तलाश जरूरी

कानपुर, 11 नवम्बर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) कानपुर में अब चुकन्दर से इथेनॉल बनाने की तैयारी में जुट गया है। देश में पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रित करने के लिए पारम्परिक स्रोतों तथा शीरे से लक्ष्य प्राप्त करना संभव नहीं है और अब वैकल्पिक स्रोतों की तलाश आवश्यक है। वर्तमान में 10 प्रतिशत ब्लेंडिंग के लिए 330 करोड़ लीटर इथेनॉल की आवश्यकता है, पर अभी करीब 6.5 प्रतिशत ही संभव हो सकेगी। अब बढ़ती डिमांड के अनुसार भविष्य में 20 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेंडिंग हेतु नये विकल्पों की तलाश करना जरूरी होगा। अब बेल्जियम की सेस वेन्डर हैव कंपनी और एनएसआई के बीच एक करार हुआ है जिसके तहत कंपनी चुकन्दर की विभिन्न प्रजातियों के बीज उपलब्ध करायेगी, जिसका संस्थान में वर्षभर परीक्षण किया जाएगा। यूरोप सहित कई अन्य देश मिश्र, मोरक्को, ईरान, ईराक आदि देशों में चुकन्दर से चीनी बनायी जाती है। विदेश में ठंडी जलवायु में चुकन्दर की फसल भी बेहतर होती है। एनएसआई कानपुर के निदेशक प्रो. नरेद्र मोहन ने बताया कि अब संस्थान में चुकन्दर का उपयोग इथेनॉल बनाने की प्रक्रिया का विकास किया जा रहा है। प्रारम्भिक प्रयोगों से संकेत मिल रहे है कि एक टन चुकन्दर से लगभग 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। चुकन्दर की फसल 5-6 महीने में तैयार हो जाती है और गन्ने की अपेक्षा सिंचाई में 30 से 40 प्रतिशत पानी कम लगता है। उत्तर भारत में चुकन्दर की नवम्बर में बुवाई कर अप्रैल में फसल काटी जा सकती है। जब वातावरण ठंडा रहता है। इसकी फसल को गन्ने के साथ सहफसल के रूप में भी लिया जा सकता है जिसके किसानों की आय भी बढ़ेगी। निदेशक ने बताया कि कंपनी के श्री जोन नोयल, मार्केटिंग हेड एवं राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के मध्य वार्ता हुई जिसमें श्री नोयल द्वारा चुकन्दर की एसजेड-35, पीएसी 60008 प्रजातियों के बीज भी संस्थान को उपलब्ध करायेंगे।

- एक टन चुकन्दर से प्राप्त हो सकेगा 90-100 लीटर इथेनॉल
- बेल्जियम की सेस वेन्डर हैव कंपनी व एनएसआई के बीच वार्ता

निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन के साथ कम्पनी के प्रतिनिधि।

अब चुकंदर से बनेगा इथेनॉल

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान अब चुंकदर से इथेनॉल बनाएगा। संस्थान के साथ बेल्जियम की सेस वेंडर हैव कंपनी आगे आई है, जो चुंकदर की प्रजातियों के बीज संस्थान को उपलब्ध कराएगी। सोमवार को इसके लिए संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन और कंपनी के मार्केटिंग हेड जोन नोयल के साथ इसकी सैद्धांतिक सहमति बनी।

संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि इथेनॉल बनाने के लिए वैकल्पिक विषयों की तलाश जारी है। उन्होंने कहा कि चुकंदर ठंडी जलवायु की ऐसी फसल है जिसका इस्तेमाल यूरोप और अन्य जगह चीनी बनाने के लिए होता है। प्रारंभिक प्रयोगों से संकेत मिले हैं कि एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। चुकंदर की फसल 5-6 महीने में तैयार होती है

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन (बीच में) के साथ सेस वेंडर हैव कंपनी के मार्केटिंग हेड जोन नोयल (दाएं)।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान करेगा तैयारी, बेल्जियम की सेस वेंडर हैव का लेगा सहयोग

और गन्ने की अपेक्षा 30 से 40 फीसदी कम पानी लगता है। प्रो. मोहन ने कहा कि कंपनी चुकंदर के बीज संस्थान को उपलब्ध कराएगी।

शर्करा संस्थान अब करेगा चुकंदर से इथेनाल बनाने की कवायद

कानपुर (एसएनबी)। कानपुर स्थित राष्ट्रीय शर्करा संस्थान पेट्रोल में ब्लैंडिंग के लिए जरूरी इथेनाल की मांग पूरी करने के लिए अब चुकंदर से इथेनाल बनाने की संभावनाओं पर काम करेगा। संस्थान के साथ मिलकर इस विषय पर कार्य करने के लिए वेल्जियम की 'सेस वेंडर हैव' कंपनी आगे आई है। कंपनी चुकंदर के विभिन्न प्रजातियों की बीज संस्थान को उपलब्ध करायेगी, जिनका संस्थान के फार्म पर परीक्षण करने के साथ ही इथेनाल बनाने पर अनुसंधान किया जायेगा।

संस्थान व वेल्जियम की कंपनी के बीच सोमवार को उक्त लक्ष्य को लेकर सैद्धांतिक सहमति बनी। यहां आये कंपनी के मार्केटिंग हेड जोन नोयल ने संस्थान के निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन के साथ बैठक कर औपचारिकताएं पूरी कीं। उक्त कंपनी ने चुकंदर की एसजेड-35, पीएसी 60008 प्रजातियों के बीज संस्थान को उपलब्ध करा भी दिये हैं।

निदेशक ने बताया कि देश में पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनाल मिश्रित करने के लिए पारंपरिक स्त्रोत गन्ने के शीरे से लक्ष्य प्राप्त करना

बेल्जियम की कंपनी सहयोग के लिए आगे आयी, संस्थान को उपलब्ध कराये चुकंदर के बीज

संभव नहीं है। वर्तमान में 10 प्रतिशत ब्लैंडिंग के लिए वांछित 330 करोड़ लीटर इथेनाल की आवश्यकता है। परंतु वर्तमान वर्ष में यह लगभग 6.5 प्रतिशत संभव हो सकेगी। उन्होंने कहा कि लगातार बढ़ती आवश्यकता एवं भविष्य में 20 प्रतिशत इथेनाल ब्लेंडिंग के लिए नये विकल्पों को तलाश जाना जरूरी है।

चुकंदर ठंडी जलवायु की एक ऐसी फसल है, जिसका उपयोग यूरोप व कई अन्य देशों में चीनी बनाने में किया जाता है। यहां चुकंदर का उपयोग इथेनाल बनाने की प्रक्रिया का विकास करने के लिए किया जायेगा। प्रारंभिक प्रयोगों से संकेत मिलते हैं कि एक टन चुकंदर से लगभग 90-100 लीटर इथेनाल प्राप्त किया जा सकता है। चुकंदर की फसल 5-6 महीने में तैयार हो जाती है एवं इसमें गन्ने की अपेक्षा सिंचाई में 30-40 प्रतिशत कम पानी लगता है।

उत्तर भारत में चुकंदर की नवम्बर में बुवाई कर अप्रैल में काटा जा सकता है। इसकी फसल को गन्ने के साथ सह-फसल के रूप में भी लिया जा सकता है। इससे किसानों की भी आय बढ़ेगी।

चुकंदर दूर करेगा देश में एथेनॉल की कमी

PIC: DAINIK JAGRAN INEXT

● बेल्जियम की कंपनी से किया करार.

KANPUR (11 Nov): देश में एथेनॉल की कमी पूरा करने के लिए एनएसआई चुकंदर से एथेनॉल बनाने की टेक्निक पर काम कर रहा है. लैब लेवल पर ट्रायल पूरी तरह सफल रहा है. एक टन चुकंदर से 90-100 लीटर एथेनॉल बनाया जा सकेगा. यह जानकारी एनएसआई डायरेक्टर प्रो. नरेन्द्र मोहन ने दी.

6.5 परसेंट पेट्रोल में मिला रहे

सेंट्रल गवर्नमेंट पेट्रोल में 10 फीसदी एथेनॉल मिलाने के डायरेक्शन दे चुकी है लेकिन, जरूरत के मुताबिक अभी देश में एथेनॉल का प्रोडक्शन नहीं हो पा रहा है. इसलिए शुगर इंडस्ट्री चीनी के साथ-साथ नई टेक्नोलॉजी के जरिए एथेनॉल का प्रोडक्शन बढ़ाने पर फोकस कर रही है. इसीलिए चुकंदर से एथेनॉल बनाने के लिए एनएसआई बेल्जियम की सेस वेन्डर हैव कंपनी के साथ मिलकर काम कर रही है. शुगर केन की तुलना में चुकंदर को तैयार करने 30 से 40 प्रतिशत की पानी कम लगता है.

www.livehindustan.com

गन्ने से ही नहीं अब चुकंदर से भी बनाया जाएगा इथेनॉल

विकल्प

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान अब चुकंदर से भी इथेनॉल बनाएगा। इसके लिए खेतों में गन्ने के साथ-साथ चुकंदर बोया जाएगा। एथेनॉल के लिए शीरे के लक्ष्य को प्राप्त करना संभव नहीं है, इसलिए वैकल्पिक स्रोतों को देखा जा रहा हैं। इसमे चुकंदर बड़ा कारगर है। इसलिए बेल्जियम की सेस वेन्डर हैव कंपनी के साथ एनएसआई की सैद्धांतिक सहमति बनी हैं। कंपनी बीज देगी।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान परिसर में निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन और बेल्जियम की सेस वेन्डर हैव कंपनी के मार्केटिंग हेड जोन नोयल के बीच सहमति बनी हैं। निदेशक ने बताया कि कंपनी चुकंदर की विभिन्न प्रजातियों के बीज संस्थान को मुहैया कराएगी। निदेशक ने बताया कि देश में पेट्रोल में 10 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रित करने के लिए पारंपरिक स्त्रोतों और शीरे से लक्ष्य प्राप्त करना मुश्किल हैं। वर्तमान में 10 प्रतिशत मिश्रण के लिए 330 करोड़ लीटर एथेनॉल की जरूरत हे। फिर भी वर्तमान वर्ष में 6.5 प्रतिशत ही संभव हो सका हैं। एक टन चुकंदर में करीब 90 से 100 लीटर एथेनॉल बनता है।